सृजनात्मकता को बढ़ाने में शिक्षक की भूमिका(Role of teacher in fostering creativity)

1. शिक्षक का कर्तव्य है कि वह छात्रों को विभिन्न सृजनात्मक कार्यों को नवीनतम सूचनाओं को संग्रह करने का अवसर एवं सुविधा प्रदान करें।
2. शिक्षक द्वारा छात्रों को सृजनात्मक चिंतन के सिद्धांतों को बताया जाए और किसी अविष्कार विशेष में सृजनात्मक अंशो की ओर ध्यान दिलाया जाए।
3. शिक्षक बालक को उत्पादक चिंतन और मूल्यांकन को प्रोत्साहन दे।
4. शिक्षक स्वयं सृजनात्मक प्रवृत्ति का हो एवं स्वयं ही साहित्य, कला, विज्ञान आदि के क्षेत्र में सजन कार्य करें और छात्रों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें।
5. शिक्षक द्वारा छात्रों को सुधार, निर्माण, खोज और आविष्कार की क्रियाओं में लगाया जाए।
6. शिक्षक छात्रों की रचना की प्रशंसा करें, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास करें और उनका उचित मूल्यांकन करें।
7. शिक्षक द्वारा छात्रों को उनके दैनिक जीवन की समस्याओं की कठिनाइयों के स्तर को समझने का अवसर प्रदान करें।
8. शिक्षक को चाहिए कि वह छात्र के समक्ष एक ऐसी समस्या उत्पन्न करें, जिसमें वे स्वयं अपने पूर्व ज्ञान तथा तथ्यों के ज्ञान का स्थानांतरण करते हुए कुछ मौलिक समाधान प्रस्तुत कर सके।
9. सृजनात्मकता के प्रशिक्षण एवं विकास के लिए यह जरूरी है कि छात्रों को समस्या समाधान के संदर्भ में तथ्यों का ज्ञान हो इसके लिए शिक्षक छात्रों को पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन छात्र संघ विद्यालय कृषि फार्म स्कूल जलपान गृह या भोक्ता भंडार आदि के कार्यों में भाग लेने के लिए शुभ अवसर प्रदान करें और प्रोत्साहित करें।

10. शिक्षक को किसी कार्य में छात्रों की रुचि और प्रयास को बनाए रखना चाहिए और यथासंभव अभ्यास द्वारा दृढ़ होने का प्रयास करना चाहिए, कभी-कभी वाचिक या वस्तु गत रूप से पुरस्कृत भी किया जाना चाहिए।
11. शिक्षक द्वारा बच्चों को अपने निश्चय का स्वयं ही यथार्थ मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।